मैं पाकिस्तान में सताया गया हिंदू हूं

मैं पाकिस्तान में सताया गया हिंदू हूं
मैं हिंदुस्तान में दबाया गया मुस्लिम हूं
मैं इज़रायल का मारा फिलिस्तीनी हूं
मैं जर्मनी में कत्ल हुआ यहूदी हूं
मैं इराक का जलाया हुआ कुवैती हूं
मैं चीन द्वारा कुचला गया तिब्बती हूं
मैं अमेरिका में घुटता हुआ ब्लैक हूं
मैं आइसिस से प्रताड़ित यज़ीदी हूं

मैं अशोक से हारा कलिंगी हूं
मैं रशिया से त्रस्त सीरियन हूं, पोलिश हूं, हंगेरियन हूं, यूक्रेनी हूं
मैं अकबर से परास्त मेवाड़ी हूं
मैं ब्रिटेन के हाथों लुटा एशियाई हूं, अफ्रीकी हूं, ऑस्ट्रेलियाई हूं, उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकी हूं

मैं अमेरिका के हथियारों से तबाह किया गया इराकी हूं, वियतनामी हूं, लीबियन हूं, अफ़ग़ानिस्तानी हूं, लगभग 70 नागरिकताओं की जलती हुई कहानी हूं

मैं म्यांमार से भगाया गया रोहिंग्या हूं
मैं श्रीलंका से मिटाया गया तमिल हूं
मैं चौरासी का सिख हूं
मैं भारत के जंगलों से उजाड़ा गया आदिवासी हूं
मैं अपनी धरती पर कैद कश्मीरी हूं
मैं कश्मीर से बेघर किया गया कश्मीरी पंडित हूं
मैं असम का बंगाली हूं
मैं खुद के देश में रंगभेद झेलता पूर्वोत्तर का वासी हूं

मैं पितृसत्ता से जान बचाती हुई लड़की हूं
मैं परिवार से निकाला हुआ समलैंगिक हूं
मैं शोर में दबाया गया सवाल हूं
मैं वेदों से बहिष्कृत एक जाति हूं
मैं सामाजिक सम्मान के लिए मारा गया प्रेमी हूं
मैं धर्मांधों से धमकाया गया नास्तिक हूं
मैं भीड़ से बाहर धकेली गयी चेतना हूं
मैं तर्कहीनों से सहमा हुआ तर्कवादी हूं

मैं कभी किसी गांव का, कभी किसी राज्य का, कभी किसी देश का, कभी किसी समाज का, कभी किसी संस्था का, तो कभी पूरी दुनिया का अल्पसंख्यक हूं
मैं बहुसंख्यकों को दिखाया गया खतरा हूं
मैं लुटेरी सत्ता का सबसे आसान मोहरा हूं
और मैं जानता हूं कि ये दोनों हंसेंगे अगर मैं खुद को निर्दोष कहूंगा
तो फिर मेरी धरती कौनसी है
मेरा देश किधर है
मेरा घर कहां है
क्या मैं इस पृथ्वी पर हमेशा खानाबदोश रहूंगा ?

– साइबर नजर

भारत, इंडिया....

मुकेश असीम

बहारत/भारत = मसाले

(ग्रीक/तुर्की/लेवांतीन/कुर्दिश आदि पूर्वी भूमध्यसागरीय भाषाओं में)

बहार फारसी शब्द है सुगंधित कलियों, फूलों, पत्तियों के लिए। मसाले इनसे बनते हैं। शब्द बना बहारत। एक भाषा से दूसरी भाषा में जाते शब्द रूप बदलते हैं तो जहां कुर्दिश में ये हुआ बिहारत, वहीं ग्रीक आदि कुछ भाषाओं में ये हो गया भारत। जहां से मसाले आते थे वो भारत। पर मसाले अरब सागर के तट पर स्थित पश्चिमी क्षेत्रों या मौजूदा केरल से गुजरात तक से जाते थे। यह समुद्रपारीय व्यापार ढाई हजार साल पहले से चल रहा है। जिन्हें यह मसाले लंबे सिल्क रूट व्यापार से मध्य एशिया होकर पहुंचते थे उनके लिए तो बस यह कल्पना का भारत ही था।

जो यूनानी (ग्रीक) स्थल मार्ग से आये वो इस मसालों वाले भारत में नहीं, उससे कई हजार मील दूर एक दूसरी जगह सिंधु नदी घाटी में पहुंचे। वहां से बना इंडस, इंडिका, और उससे इंडिया।

ये दो नाम दो अलग स्थानों के हैं और दोनों का ही उदगम, जैसा इतिहास में अक्सर हुआ है, दूसरे लोगों द्वारा किसी स्थान को दिया गया नाम है। ऐसे ही ब्रिटेन, चीन, अमरीका, आदि दूसरों द्वारा उन जगहों को दिए नाम हैं।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने इन दोनों को ही नहीं, ऐसे कई क्षेत्रों को एक फौजी प्रशासनिक इकाई के अंतर्गत ला दिया। यह बाद में एक साझा बाजार या

आर्थिक इकाई बनने लगा (जो काम आज जीएसटी से अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है)। अत: वो इन सभी का साझा दुश्मन बन गया। एक साझा शत्रु से साझा संघर्ष में बनी साझा मानसिकता की वजह से अलग भाषा व इतिहास वाले भिन्न भिन्न क्षेत्रों के जितने जनसमुदाय 1947 में एक साझा राजनीतिक इकाई में शामिल होने को तैयार हुए, वही आज का इंडिया/भारत है।

पुनश्च: महाभारत उपरोक्त दोनों से कई सदी बाद की रचना है। वहां से इस शब्द के उदगम का सिद्धांत 19 वीं सदी में उभरे उस पुनरुत्थानवाद की देन है जो भीष्म साहनी की 'अहं ब्रह्मास्मि' कहानी के बुजदिल 'नायक' की तरह गुलामी से लड़ नहीं सकता था, अत: अपनी कुंठा दूर करने के उपाय बतौर अंतर्मुखी बनकर समस्त ज्ञान विज्ञान का स्रोत किसी प्राचीन ग्रंथ में ढूंढने से ही विश्वगुरू होने का आत्मगौरव हासिल करने में जुट गया।

एस्कलेटर पर अद्भुत राहुल दर्शन / अपूर्वा

एस्कलेटर चलसोपान या चलती सीढ़ी, इसके आविष्कार को भले ही दुनिया में सवा सौ साल हो गए पर अपने देश में आज भी आम आदमी इसका 'लुत्फ़' लेते हैं फिर गांव वालों की तो बात ही क्या ?

याद करिए एक किसी फिल्म में इरफ़ान माल में बार-बार एस्कलेटर पर चढ़ने आता है। एक बार अपने परिवार को लाता है पकड़ा जाता है अपमानित किया जाता है। इसके बाद पूरी फिल्म में इरफ़ान अपने तरीके से बदला लेता है ..

ख़ैर ,राहुल सांकृत्यायन जी जब 1932 -33 में इंग्लैंड पहुंचते हैं तो पहली बार एस्कलेटर से उनका वास्ता पड़ता है।

एस्कलेटर को पहली बार देखते-चढ़ते हैं और इस पर जो कहते हैं, वो एस्कलेटर -दर्शन गौरतलब है।

पहली ही बार में ये सिर्फ राहुल जी ही कह सकते थे।

राहुल जी लिखते हैं-"पुरानी दुनिया से नयी दुनिया आने में कितनी दिमागी अड़चनें पड़ती हैं, वह इस सीढ़ी के चढ़ने उतरने में मुझे मालूम हो रही थीं।

सीढ़ी बिजली के जोर से स्वयं सरकती जाती, लेकिन सरकने वाली सीढ़ी और स्थिर धरती का एक संधिस्थल था, जहां अचल से चल आधार पर पैर रखना पड़ता था। सीढ़ी लगातार सरकती जा रही है, अगर आप दाहिना पैर रखकर जरा देर भी सोचने लगते हैं तो बायां पैर अपनी जगह रह जाता है और दाहिने को सीढ़ी खींचे जा रही है इसलिए ज़रूरी है एक क्षण की भी देरी किये बिना ही दूसरे पैर को भी सीढ़ी पर रख दें। फिर दूसरी दिक्कत है अचल से

चल आधार पर जाते ही आपके अपने शरीर के सारे बोझ को नयी तरह से सम्हालना पड़ता है।

.....मुझे इस बिजली की सीढ़ी में चढ़ने उतरने में बड़ा तरद्दुद मालूम होता था और इसलिए मेरा दिमाग बहुत सोचने के लिए मजबूर होता था।

मैं ख़याल करता था, दुनिया भी इसी तरह की चलने वाली एक सीढ़ी है। हमारे एक पैर को तो वो ज़बरदस्ती पकड़ खींच चल देती है, लेकिन दूसरे को हम स्थिर भूमि पर गाड़ करके रखना चाहते हैं।

हिन्दुस्तान इस बीमारी का सबसे ज़बरदस्त शिकार है। परिस्थितियां ज़बरदस्ती एक टांग को खींचकर उसे भविष्य की और ले जा रही है ,लेकिन वह अपनी धार्मिक सामाजिक सभी बातों में अतीत को पकड़े रखना चाहता है।

हमारे लोग साइंस पढ़ते हैं, भूगोल पढ़ते हैं, जोतिस पढ़ते हैं, फिर ग्रहण नहाकर पुण्य-दान कर सूर्य-चंद्र की मुक्ति कराते हैं, और पुराने भ्रमपूर्ण जोतिस पर आधारित भविष्यवाणी पर पूरा भरोसा रखते हैं, हिमालय की ओर स्वर्ग जाते वक्त पंडितों के गल जाने की बात पर विश्वास करते हैं; चुटिया, जनेऊ, धोती, छूतछात सबको लिए दिए इस बिजली की सीढ़ी के भवसागर को पार कर जाना चाहते हैं .."